

1892	1891	1890	1889	1888	1887	1886	1885	1884	1883	1882	1881	1880	1879	1878	1877	1876	1875	1874	1873	1872	1871	1870	1869	1868	1867	1866	1865	1864	1863	1862	1861	1860	1859	1858	1857	1856	1855	1854	1853	1852	1851	1850	1849	1848	1847	1846	1845	1844	1843	1842	1841	1840	1839	1838	1837	1836	1835	1834	1833	1832	1831	1830	1829	1828	1827	1826	1825	1824	1823	1822	1821	1820	1819	1818	1817	1816	1815	1814	1813	1812	1811	1810	1809	1808	1807	1806	1805	1804	1803	1802	1801	1800	1799	1798	1797	1796	1795	1794	1793	1792	1791	1790	1789	1788	1787	1786	1785	1784	1783	1782	1781	1780	1779	1778	1777	1776	1775	1774	1773	1772	1771	1770	1769	1768	1767	1766	1765	1764	1763	1762	1761	1760	1759	1758	1757	1756	1755	1754	1753	1752	1751	1750	1749	1748	1747	1746	1745	1744	1743	1742	1741	1740	1739	1738	1737	1736	1735	1734	1733	1732	1731	1730	1729	1728	1727	1726	1725	1724	1723	1722	1721	1720	1719	1718	1717	1716	1715	1714	1713	1712	1711	1710	1709	1708	1707	1706	1705	1704	1703	1702	1701	1700	1699	1698	1697	1696	1695	1694	1693	1692	1691	1690	1689	1688	1687	1686	1685	1684	1683	1682	1681	1680	1679	1678	1677	1676	1675	1674	1673	1672	1671	1670	1669	1668	1667	1666	1665	1664	1663	1662	1661	1660	1659	1658	1657	1656	1655	1654	1653	1652	1651	1650	1649	1648	1647	1646	1645	1644	1643	1642	1641	1640	1639	1638	1637	1636	1635	1634	1633	1632	1631	1630	1629	1628	1627	1626	1625	1624	1623	1622	1621	1620	1619	1618	1617	1616	1615	1614	1613	1612	1611	1610	1609	1608	1607	1606	1605	1604	1603	1602	1601	1600	1599	1598	1597	1596	1595	1594	1593	1592	1591	1590	1589	1588	1587	1586	1585	1584	1583	1582	1581	1580	1579	1578	1577	1576	1575	1574	1573	1572	1571	1570	1569	1568	1567	1566	1565	1564	1563	1562	1561	1560	1559	1558	1557	1556	1555	1554	1553	1552	1551	1550	1549	1548	1547	1546	1545	1544	1543	1542	1541	1540	1539	1538	1537	1536	1535	1534	1533	1532	1531	1530	1529	1528	1527	1526	1525	1524	1523	1522	1521	1520	1519	1518	1517	1516	1515	1514	1513	1512	1511	1510	1509	1508	1507	1506	1505	1504	1503	1502	1501	1500	1499	1498	1497	1496	1495	1494	1493	1492	1491	1490	1489	1488	1487	1486	1485	1484	1483	1482	1481	1480	1479	1478	1477	1476	1475	1474	1473	1472	1471	1470	1469	1468	1467	1466	1465	1464	1463	1462	1461	1460	1459	1458	1457	1456	1455	1454	1453	1452	1451	1450	1449	1448	1447	1446	1445	1444	1443	1442	1441	1440	1439	1438	1437	1436	1435	1434	1433	1432	1431	1430	1429	1428	1427	1426	1425	1424	1423	1422	1421	1420	1419	1418	1417	1416	1415	1414	1413	1412	1411	1410	1409	1408	1407	1406	1405	1404	1403	1402	1401	1400	1399	1398	1397	1396	1395	1394	1393	1392	1391	1390	1389	1388	1387	1386	1385	1384	1383	1382	1381	1380	1379	1378	1377	1376	1375	1374	1373	1372	1371	1370	1369	1368	1367	1366	1365	1364	1363	1362	1361	1360	1359	1358	1357	1356	1355	1354	1353	1352	1351	1350	1349	1348	1347	1346	1345	1344	1343	1342	1341	1340	1339	1338	1337	1336	1335	1334	1333	1332	1331	1330	1329	1328	1327	1326	1325	1324	1323	1322	1321	1320	1319	1318	1317	1316	1315	1314	1313	1312	1311	1310	1309	1308	1307	1306	1305	1304	1303	1302	1301	1300	1299	1298	1297	1296	1295	1294	1293	1292	1291	1290	1289	1288	1287	1286	1285	1284	1283	1282	1281	1280	1279	1278	1277	1276	1275	1274	1273	1272	1271	1270	1269	1268	1267	1266	1265	1264	1263	1262	1261	1260	1259	1258	1257	1256	1255	1254	1253	1252	1251	1250	1249	1248	1247	1246	1245	1244	1243	1242	1241	1240	1239	1238	1237	1236	1235	1234	1233	1232	1231	1230	1229	1228	1227	1226	1225	1224	1223	1222	1221	1220	1219	1218	1217	1216	1215	1214	1213	1212	1211	1210	1209	1208	1207	1206	1205	1204	1203	1202	1201	1200	1199	1198	1197	1196	1195	1194	1193	1192	1191	1190	1189	1188	1187	1186	1185	1184	1183	1182	1181	1180	1179	1178	1177	1176	1175	1174	1173	1172	1171	1170	1169	1168	1167	1166	1165	1164	1163	1162	1161	1160	1159	1158	1157	1156	1155	1154	1153	1152	1151	1150	1149	1148	1147	1146	1145	1144	1143	1142	1141	1140	1139	1138	1137	1136	1135	1134	1133	1132	1131	1130	1129	1128	1127	1126	1125	1124	1123	1122	1121	1120	1119	1118	1117	1116	1115	1114	1113	1112	1111	1110	1109	1108	1107	1106	1105	1104	1103	1102	1101	1100	1099	1098	1097	1096	1095	1094	1093	1092	1091	1090	1089	1088	1087	1086	1085	1084	1083	1082	1081	1080	1079	1078	1077	1076	1075	1074	1073	1072	1071	1070	1069	1068	1067	1066	1065	1064	1063	1062	1061	1060	1059	1058	1057	1056	1055	1054	1053	1052	1051	1050	1049	1048	1047	1046	1045	1044	1043	1042	1041	1040	1039	1038	1037	1036	1035	1034	1033	1032	1031	1030	1029	1028	1027	1026	1025	1024	1023	1022	1021	1020	1019	1018	1017	1016	1015	1014	1013	1012	1011	1010	1009	1008	1007	1006	1005	1004	1003	1002	1001	1000	999	998	997	996	995	994	993	992	991	990	989	988	987	986	985	984	983	982	981	980	979	978	977	976	975	974	973	972	971	970	969	968	967	966	965	964	963	962	961	960	959	958	957	956	955	954	953	952	951	950	949	948	947	946	945	944	943	942	941	940	939	938	937	936	935	934	933	932	931	930	929	928	927	926	925	924	923	922	921	920	919	918	917	916	915	914	913	912	911	910	909	908	907	906	905	904	903	902	901	900	899	898	897	896	895	894	893	892	891	890	889	888	887	886	885	884	883	882	881	880	879	878	877	876	875	874	873	872	871	870	869	868	867	866	865	864	863	862	861	860	859	858	857	856	855	854	853	852	851	850	849	848	847	846	845	844	843	842	841	840	839	838	837	836	835	834	833	832	831	830	829	828	827	826	825	824	823	822	821	820	819	818	817	816	815	814	813	812	811	810	809	808	807	806	805	804	803	802	801	800	799	798	797	796	795	794	793	792	791	790	789	788	787	786	785	784	783	782	781	780	779	778	777	776	775	774	773	772	771	770	769	768	767	766	765	764	763	762	761	760	759	758	757	756	755	754	753	752	751	750	749	748	747	746	745	744	743	742	741	740	739	738	737	736	735	734	733	732	731	730	729	728	727	726	725	724	723	722	721	720	719	718	717	716	715	714	713	712	711	710	709	708	707	706	705	704	703	702	701	700	699	698	697	696	695	694	693	692	691	690	689	688	687	686	685	684	683	682	681	680	679	678	677	676	675	674	673	672	671	670	669	668	667	666	665	664	663	662	661	660	659	658	657	656	655	654	653	652	651	650	649	648	647	646	645	644	643	642	641	640	639	638	637	636	635	634	633	632	631	630	629	628	627	626	625	624	623	622	621	620	619	618	617	616	615	614	613	612	611	610	609	608	607	606	605	604	603	602	601	600	599	598	597	596	595	594	593	592	591	590	589	588	587	586	585	584	583	582	581	580	579	578	577	576	575	574	573	572	571	570	569	568	567	566	565	564	563	562	561	560	559	558	557	556	555	554	553	552	551	550	549	548	547	546	545	544	543	542	541	540	539	538	537	536	535	534	533	532	531	530	529	528	527	526	525	524	523	522	521	520	519	518	517	516	515	514	513	512	511	510	509	508	507	506	505	504	503	502	501	500	499	498	497	496	495	494	493	492	491	490	489	488	487	486	485	484	483	482	481	480	479	478	477	476	475	474	473	472	471	470	469	468	467	466	465	464	463	462	461	460</
------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-------

Dracht wurde ursprünglich in den Ziehhägen, die an die Wohnhäuser angebaut waren, mit Hilfe einer Zugkraft des Ziehseils, das auf einer Bank befestigt war, gezogen. Das war, als noch das Holz einem Drahtziehbetrieb gehörte, wurde „Reibe“ genannt. Als später die Wasserkraft in den Drahtrollen und Drahtmühlen von den Reideameistern gebraucht wurde, wurde natürlich die Ausübung eines Drahtziehbewerks umfangreicher. In der Regel gab es in jeder Rolle oder Mühle mehrere Bankzögersbänke, Kleinzögersbänke und Winnerscheiben. Damit war der Besitz eines Reideameisters auch wertvoller geworden. Wenn dann ein Reideameister seinen Besitz vererbt, so wird von „Ge-reide und Unger-eide“ gesprochen. Unter Unger-eide versteht man wohl vor allen Dingen die Wasserkraft. Da diese Wasserkraft dem Landesherren gehörte, so mußte jährlich eine Abgabe von den Reideameistern erstattet werden: Es war dies in alten Zeiten jährlich ein Pfund Wachs und zwei Hühner.

Dr. Lappe erklärt Reideameister anders. Er weist darauf hin; daß Reiden so viel wie verfertigen oder machen bedeutet. Es ist richtig, daß reiden in dieser Bedeutung dieselbe in alten Urkunden vorkommt. Das Wort „reide“ kommt in der Bedeutung fertig auch in anderen deutschen Dialecten vor, so z. B. im Thüring'schen. Dieser Deutung kann man zustimmen, wenn es auch gewagt erscheint, wenn man behauptet, daß „Reideameister“ allgemein einen Handwerksmeister bedeutet.

Infolge der Veränderung und Entwicklung des Drahtziebergewerbes bekommt allmählich das Wort Reideameister einen etwas anderen Inhalt. Ursprünglich hieß wohl jeder Drahtzieher „Reideameister“, ganz gleichgültig, ob er viel oder wenig Knechte oder überhaupt keinen Knecht hatte. Durch das Emporkommen der Drahtmühlen kam der Reideameister immer mehr in eine gehobene Stellung. Das ersehen wir daraus, daß später ein Unterschied zwischen Reideameistern und Drahtziehern gemacht wird. Aus einer Aufstellung wissen wir, daß in Altenna im Jahre 1738 wohnten:

48 Kettenmeister, 25 Drahtzieher, 59 Vorlagler,
51 Drahtschmiede, 25 Zangenschmiede, 4 Spanken-
schmiede, 7 Nagelschmiede, 5 Kleinschmiede, 4 Huf-

schiede. Bei dieser Aufzählung fällt uns die kleine Zahl der Reidemeister im Verhältnis zur großen Zahl der Drahtzieher auf. Als Reidemeister ist wohl später auch derjenige bezeichnet worden, der die Drahtmühle besah oder wenigstens Werkzeug darin. Kein Wunder, daß ein Reidemeister zugleich Webger und Brauer, Krämer, Brauntrentbrenner und dergleichen sein konnte. Selbst Witwen hatten das Recht der Drahtreibung, denn sie erbten nach altem Junftrecht ohne weiteres das Handwerksprivilegium des verstorbenen Mannes.

Wir haben hier eine Entwidlung im Drahtziehergewerbe, wie wir sie überhaupt bei allen Handwerken haben. Die Differenzierung schritt immer weiter vorwärts. Ursprünglich hat der Reidemeister auch das Rohmaterial selbst verschafft und bearbeitet. Später wurde das Rohmaterial (der Drahtosemund) von den Hammerwerken der Umgegend bezogen. Der Reidemeister hatte dann nur die Verarbeitung des Rohmaterials in den Händen.

Draht wurde aber nur an wenigen Stellen im deutschen Reich hergestellt. Für Westdeutschland kommt eigentlich nur die Gegend von Aachen, Jülich und Lützen in Betracht. Infolge dessen war der Absatz, der Verkauf, der Versand des Drahtes von größter Wichtigkeit. Diesen Drahthandel führte natürlich der Reidemeister. Da taucht nun auch sonst der Begriff „Reidemeister“ auf. Aus dem Siegerlande wird uns berichtet, daß man unter Reidemeister (Raitmeister) den Händler verstand, der den Eisenblech oder das Rohseisen, hauptsächlich aber das Schmelzblech vertrieb. Im Siegerlande soll also Raitmeister soviel wie Eisenhändler bedeuten, der natürlich in den früheren Zeiten zugleich Hütten- oder Hammerbesitzer war. Raitmeister in der Bedeutung Rechenmeister ist auch sonst im deutschen Sprachgebrauch zu finden, denn das Wort „raiten“, oder „teilen“ bedeutet soviel wie rechnen, berechnen, zählen.

Im bergischen Lande ist der Reider oder Reidemeister noch etwas anderes. In der Solinger Gegend gab der Schmied der Waffe die Form, der Schleifer das Aussehen, der Weger und Vergolder die Verzierungen. Den Griff lieferte der Kreuz- oder Knaufschmied, die Scheide der Schmiedsgerber; der Reider oder Reidemeister endlich legte alle Teile zusammen und machte die Waffe für den Verkauf bereit. An dieser Stelle tritt sehr deutlich hervor, daß hier das Wort Reidemeister soviel wie Fertigmacher bedeutet.

Wir kommen also zu folgendem Ergebnis: Der Reidemeister ist 1. der Fertigsteller des Drahtes, der Drahtzieher, 2. der Besitzer des Gereides, d. h. in der Drahtmühle befindlich, 3. der Drahthändler, der für eine größere Zahl von Drahtziehern den Draht nach auswärts verkauft.

Dr. Adolf Seilmann.

Bon R. Rampredi.

Quellenkenntnis breit und ausführlich durch
narr Drahthgewerbe die Rede (§. 100). Hier wird auch der Versuch gemacht
Namen Reidemeister zu erklären (vgl. S.
ff.). In der Zeitschrift des Vereins für
und westfälische Volkskunde aus dem Jahre
finden wir schon eine längere Unterfuchung
das Wort „Reitmeister“ (§. 88 ff.). In dem
dieser Zeitschrift wird Reitmeister — das
daselbe Wort ist wie Reidemeister, an der
weise brauchen wir uns nicht zu stoßen
„Rechenmeister“ bedeutet. Es werden hier
eine Reihe Belege gebracht, so daß an diese
lung nicht gezeifelt werden kann. Es
stimmt auch überein, was wir im Grimm
wo zu lesen ist „Reitmeister“ = Rechnung
ter, nur der älteren Sprache angehörig,
„Reidemeister“. Für diese Deutung wird
Grimm aus einer Urkunde des Frankfurter
vom Jahre 1473 gebracht: „der andacht
liche hruder Clafse von Weynberg zu die
reidemeister des closters und convent
Ansprug“.

Wie kommen wir aus der vorhandenen
richtigkeit heraus. Das Wort Reidemeister, d
aus den Altteuer Gewerburkunden, keine

Aus dem altwestfälischen Sandwerksleb

In dem Alteneuer Drahtgewerbe treten Handwerkermeister entgegen, die den eigentlichen Namen **Reidemeister** haben. Im 2. Theile und auch in Lüdenscheid und Iserlohn ist der Name sehr gebräuchlich gewesen, anderswo kaum. So sucht man z. B. die Reidemeister vergeblich, die in 2 starken Händen den Guss aus dem Ofen herausgegeben hat. Auch im Weimarer Böttcherbude findet man nur wenige Zeilen dieses Wort, mehrwürdigerweise aber ist etwas anders gemeint. In dem Alteneuer bedeutet Reidemeister so viel wie Drahtmeister. So tritt uns in den Willküren der hiesigen Alteneuer schon im Jahre 1534 das Wort „Reidmeyster“ entgegen, wo gefordert wird, daß der Meister, der Draht schmieden und ziehen, hat nur einem Reidemeister gemeint und ihm bleiben soll. Aus dieser Zeit geht heroor, daß der Meister sich einen und mehrere Knechte, die gegen Bezahlung Schmelze und Draht arbeiten vorstehen. Das Wort „Reidmeyster“ in den Zunftstatuten alter Zeit immer wieder zu finden, so viel wie das heutige Wort „Bediener“ kommt, aber das Wort „Reidemester“ nur auf die Erklärung dieses Wortes hinzuweisen in diesem Zusammenhang an. In der ersten von H. J. v. S. 19 p. 21. Die hiesige Alteneuer in den Verträgen der Stadt Alteneuer, das einen vertriebenen Beitrag zu den Lehn- und Rechtsverträgen des mächtigen Landesherrn darstellt, ist die Stadt Alteneuer

Bon R. Rampredi.

Quellenkenntnis breit und ausführlich durch
narr Drahthgewerbe die Rede (§. 100). Hier wird auch der Versuch gemacht
Namen Reidemeister zu erklären (vgl. S.
ff.). In der Zeitschrift des Vereins für
und westfälische Volkskunde aus dem Jahre
finden wir schon eine längere Unterfuchung
das Wort „Reitmeister“ (§. 88 ff.). In dem
dieser Zeitschrift wird Reitmeister — das
daselbe Wort ist wie Reidemeister, an der
weise brauchen wir uns nicht zu stoßen
„Rechenmeister“ bedeutet. Es werden hier
eine Reihe Belege gebracht, so daß an diese
lung nicht gezeifelt werden kann. Es
stimmt auch überein, was wir im Grimm
wo zu lesen ist „Reitmeister“ = Rechnung
ter, nur der älteren Sprache angehörig,
„Reidemeister“. Für diese Deutung wird
Grimm aus einer Urkunde des Frankfurter
vom Jahre 1473 gebracht: „der andacht
liche hruder Clafse von Weynberg zu die
reidemeister des closters und convent
Ansprug“.

Wie kommen wir aus der vorhandenen
richtigkeit heraus. Das Wort Reidemeister, d
aus den Altteuer Gewerburkunden, keine